International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जया जादवानी के कथा साहित्य में स्त्री–मुक्ति संघर्ष

बलप्रदा श्रीवास्तव
शोधार्थी
(बरकतउल्ला विश्वविद्यालय)
भोपाल (म.प्र.)

डॉ. प्रतिमा यादव
(प्राध्यापक हिन्दी)
संचालक
पण्डित कुंजीलाल दुबे
राष्ट्रीय संसदीय विद्यापीठ, भोपाल
(म.प्र.)

''स्त्री न स्वयं गुलाम रहना चाहती है और न ही पुरूष को गुलाम बनाना चाहती है, वह चाहती है मानवीय अधिकार''। – **प्रभा खेतान**

अपने विचारों में आधुनिकता के कारण जया जादवानी समकालीन रचनाकारों में अग्रणीय है। आधुनिक स्त्री–विमर्श पारंपरिक स्त्री संबंधी दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न है। ''जिस दिन यह समाज स्त्री शरीर का नहीं, शरीर के अंग प्रत्यंग का नहीं, स्त्री की मेधा और श्रम का मूल्य देना सीख जाएगा, सिर्फ उसी दिन स्त्री 'मनुष्य' के रूप में स्वीकृत होगी।''1 विकास की राह पर निरन्तर अग्रसर होती स्त्री हमेशा से ही विमर्श के केन्द्र में रही है। यह केन्द्रीयता स्त्रियों को सहज ही हासिल नही हुई है, इसके लिए स्त्रियों ने निरंतर संघर्ष किए हैं। सिमोन द वोउवार की पुस्तक 'The Second Sex' में सिमोन का मानना था कि ''स्त्री मुक्ति का मार्ग स्त्री के अपने संघर्ष से ही निकलेगा।''2

जया जादवानी का लेखन संक्रमणशील युग का लेखन है, जहां स्त्री के कई रूप पृथ्वी पर विद्यमान हैं। एक और स्त्री ने हर क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है, तो दूसरी और वह आज पितृसत्ता की परम्परागत बेड़ियों में बंधी हुई विभिन्न रूपों में विभिन्न स्तरों पर शोषित हो रही है। लेखिका स्त्री जीवन को सतही तौर पर देखते हुए विचार व्यक्त कर देने की बजाय सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में उसकी पहचान, उसके अस्तित्व और उसकी अस्मिता पर प्रश्न उठाती है। यही प्रश्न कहानियों में स्त्री मन की गहराईयों को दर्शाते हैं।

जया की कहानियाँ स्त्री–मुक्ति संघर्ष के निर्माण की क्रमिक यात्रा को उजागर करती हैं। वह इस बात को जानती हैं कि सजगता, आर्थिक स्वतंत्रता और जागरूकता के बिना स्त्री मुक्ति संभव नहीं है। चूँकि स्त्री सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं की बेड़ियों में सदियों से जकड़ी हुई है, अतः उसे सबसे पहले मानसिक मुक्ति की आवश्यकता है।

जया जी का प्रथम कहानी–संग्रह 'मुझे ही होना है बार–बार' की कहानियाँ स्त्री मन की परतों के साथ ही स्त्री–पुरूष संबंधों की सच्चाई को भी समाज के सामने लाती है। अपने अनुभव के

विस्तृत दायरे में ये कहानियाँ स्त्री की बिल्कुल नई किन्तु वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। यहां स्त्री स्वयं अपने मन की बात अपने शब्दों में कहती है।

प्रथम संग्रह की पहली कहानी 'शाम की धूप' लम्बी कहानी है। यह कहानी पारंपरिक संयुक्त परिवार मे एक ऐसी बूढ़ी स्त्री की कहानी है जिसने अपना पूरा जीवन पति, बच्चों और घर की सेवा में समर्पित कर दिया, लेकिन फिर भी वह किसी के लिए जरूरी नहीं है। और उनका क्या? वे तो बेचारी इन सब के बीच जीने की अभ्यस्त हो चुकी है। दिखाई बहुत कम देता है। ''उनकी आंखे गई। सब चला गया। घर में टटोलती हुई घूम लेती, चावल धो देतीं, दाल भिगो देतीं। आटा गूंथ देतीं। कोई नही छोड़ता। दो रोटियों का हिसाब तो देना ही पड़ेगा...।''3 न जाने कितने वर्षों की पीड़ा, दुख, तकलीफ उनकी छाती में बर्फ के गोले सी सख्त होकर दफन हो गई है। वे बेटे और बहुओं को कोसती है कि भगवान तुम्हें जब बुढ़ापे में यही दिन दिखायेगा तो तुम लोग हमारा दर्द जानोगे। तभी अचानक उन्हे पुराना सब कुछ याद आता है और दुख की बर्फ पिघलकर बहने लगती है। पति ने तो कभी उनकी कद्र की ही नहीं। न औलाद अपनी हुई न तुम।

संग्रह की दूसरी कहानी 'वहां मैं हूँ' यह कहानी सामाजिक स्तर पर खुशनुमा और प्रेम से परिपूर्ण दिखाई देने वाले पति–पत्नी के संबंधों की आंतरिक जड़ता और प्रेमविहीनता को उजागर करती है। जैसे दूर से देखने मे रेत भी सुन्दर लगती है और सपने भी, उसी तरह हमारे समाज में स्त्री–पुरूष संबंध, विशेष रूप से उच्च या उच्च मध्यम वर्ग में, देखने में जितने प्रेमपूर्ण लगते हैं वास्तव में वहां उतनी ही जड़ता है। प्रेम तो वहां बिल्कुल ही नहीं है। बस एक दिखावा है। सजी धजी और मुस्कुराकर बातें करती स्त्री के बारे में कोई नहीं कह सकता कि उसे भी कोई दुख हो सकता है। उसकी तो सज–धज ही उसकी प्रसन्नता का पैमाना है। दूर से चमक–दमक देखकर यह अंदाज लगा लिया जाता है कि सब अच्छा है, परंतु उसके भीतर के अंधेरों को, उसकी इच्छाओं को न तो कोई समझना चाहता है, और न ही कोई जानना चाहता है।

कहानी के सात दृश्य उच्चवर्ग की एक ऐसी स्त्री की मानसिक स्थिति को चित्रित करते हैं। उसका मन तो कहीं शामिल ही नहीं है, बस वह अपनी देह को भुगतने के लिए छोड़ देती है, और स्वयं दूर जा खड़ी होती है। परंतु कब तक ? आखिर वह कब तक अपनी देह को ऐसे अनदेखा कर सकती है। उसकी देह पति के साथ संबंध बनाती है, पार्टियां अटेण्ड करती है, और कभी किसी बात पर एतराज नहीं करती। परंतु क्यों ? क्योंकि विरोध करके वह झमेला मोल नहीं लेना चाहती, दूसरे इस तरह उसकी जरूरतें भी पूरी होती रहती हैं। दृश्य सात– ''वह गहरी नींद में खर्राटे ले रहा है। मैं अपनी देह के पास आती हूँ। वह गहरी थकान से लस्त–पस्त आँखे फाड़े अंधेरे में जाने क्या देख रही है।''4 अब इस स्त्री को एहसास होता है कि किसी भी चीज को अपने अंदर जगह नहीं देना चाहिए। चाहे वह दुख हो या दुविधा, अंदर उसे फैलते देर नहीं लगती। अब वह अपनी देह से एकाकार कर लेती है, क्योंकि वह समझ गई है कि जब तक वह अपनी देह से अलग रहेगी उन

दोनों को कोई भी जीत लेगा। अब वह अपनी देह से अलग आधी–अधूरी नहीं रहना चाहती– ''नहीं, अब नहीं, बार–बार नही...''

कहानी मैं स्त्री मानसिक रूप से स्वतंत्र हो रही है, अपने स्व को पहचान रही है। अभी वह अपनी शर्तों पर जीवन जीने की ओर मुड़ी है, आगे बढ़ना अभी बाकी है। ''स्त्री और पुरूष प्रकृति के दो रूप हैं, एक दूसरे के पूरक, एक दूसरे के सहायक, इस मानव–यात्रा–जीवन–यात्रा के हमसफर। न कम न ज्यादा। ये दो विरोधी खेमों के लोग नहीं, बल्कि एक ही सफर के यात्री हैं। उनमें जीवन साथी का, दोस्ती का, सख्य का सम्बन्ध होना चाहिए, न कि मालिक–सेविका का।''5

संग्रह की ऐसी ही एक कहानी है 'जहाँ कोई नहीं जाता'। स्त्री, पुरूष को अपने मन की सच्चाईयाँ और इच्छाएँ बताती है, उसे बार–बार मनाती है कि वह उसे जाने, उसे समझे, उसका सहचर बने। परंतु पुरूष तो उससे बार्डर पर मिलना चाहता है। और इस हकीकत को समझ कर स्त्री एक दिन पुरूष के आने पर उसे वापस भेज देती है कि वह यहाँ नहीं रहती, दरअसल वह तो अपने अंदर की दुनिया में रहती है, जहाँ कोई नहीं जाता। ''आज वह फिर आया है। क्यूँ आया है ? जब उसे डर लगता है। बार्डर पर मिलने के लिए ? उसने दरवाजा खोल दिया है –

''क्या चाहिए ?''
''तुम ?''
''मैं यहां नहीं रहती।''
''कहां रहती हो ?''
''जहां कोई नही जाता''
वह लौट रहा है, नहीं वह लौट नहीं रहा, वहीं खड़ा है प्रतीक्षा में....।

उसने दरवाजा बंद कर दिया और नीचे उतर गई। नहीं वह उतरी नहीं है अभी, उतरने की प्रक्रिया में अधूरी खड़ी है।''6 अपने मनपसंद सहचर के इंतजार में। उसे इंतजार मंजूर है, लेकिन वह अब अपने मन को नहीं मारना चाहती।

जया जादवानी के दूसरे कहानी संग्रह 'अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है' की कहानियों की स्त्री, चेतना और साहस से सम्पन्न अपनी विकास यात्रा में एक कदम आगे बढ़ती है। अब वह बाधाओं से लड़ती है, अपने निर्णय स्वयं लेती है, और अपनी लड़ाई को जीतकर दिखाती है। अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है' की कहानियाँ आज की संवेदनशील सतर्क स्त्री की कहानियाँ है। ''यह कहानियाँ समाज में स्त्री की जगह तलाशती हैं और स्त्री नियति के ठिठके स्वरों की अस्फुट गूँज में खत्म नहीं होती है–कब्र में सोई हुई औरतों का आदमी मनचाहा इस्तेमाल करता है। औरत भी अपना इस्तेमाल होने देती है। आदमी को तकलीफ सिर्फ तभी होती है, जब वह अपनी कब्र से जाग जाती है। – यह जागना ही स्त्री की असली मुक्ति है।''7 इस संग्रह की कहानियाँ पढ़ी–लिखी स्त्री पर केन्द्रित है और उसके प्रश्नों पर प्रकाश डालती है। कहानी 'पलाश के फूल' में ''कितना गरूर था उसे स्वयं पर, कान्वेंट की एक शानदार सर्विस थी उसके पास। भविष्य में अपना

स्कूल चलाने का सपना। महात्वाकांक्षा...कुछ कर सकने की कूवत...अकेले लड़ने रहने का साहस...पर यह क्या...।''8 अपूर्वा जैसी पढ़ी–लिखी स्वाभिमानी और महात्वाकांक्षी स्त्री अपने चुनाव स्वयं करती है। वह पिता की मरजी के विरूद्ध तीन बच्चों के पिता, विधुर रोहित से शादी करती है। वह नौकरी छोड़ कर रोहित के साथ उसके घर में रहती है। परंतु ससुराल में उसे मिलता क्या है– बच्चों की उपेक्षा, घरवालों का तिरस्कार। यहाँ तक कि रोहित भी उसे नहीं समझता कि उसके भीतर क्या चल रहा है? हाँ, वह पति होने का कर्तव्य हर रात निभाता है– लेकिन मानसिक घनिष्ठता के बिना अपूर्वा शारीरिक संबंध नहीं चाहती। आखिर उसके सब्र का बांध टूट जाता है और वह रोहित की चुनौती स्वीकार कर उसके घर से चली जाती है। दो महीने की जद्दोजहद के बाद वह नौकरी, ट्यूशन करती है, बैंक से लोन लेती है, और बिल्डिंग की तलाश कर अपना स्कूल खोलती है। आज पांच साल हो गये हैं उसके संघर्ष को। उसने अपने आपको आत्मपीड़ा का शिकार नहीं होने दिया। ''और चाहा उसका दर्द विध्वंशकारी नहीं, सृजनात्मक बने। करामाती...। कभी दर्द को वजन की तरह नहीं ढोया, छाती से लगाया...सजाया...संवारा और अपना दोस्त बना लिया।''9

''जया की कहानियों में एक जीवंत जीवन का सपना है तो कहीं–कहीं उदासियों की हल्की सी लकीर भी शब्दों के आर–पार खिंची दिखती है।''10 इस प्रकार जया जादवानी नारी मन की व्यथाओं की लेखिका हैं जो कहानी में स्वयं उपस्थित होकर नारी के अंतरंग भावों को पहचानने में पूरी तरह सफल रही हैं। उन्होने अपनी कहानियों में मध्यमवर्गीय परिवार में दिनों–दिन टूटते जीवन मूल्यों के साथ स्त्री मुक्ति संघर्ष का सजीव चित्रण किया है। नारी के पीड़ा भरे जीवन के प्रति लेखिका को गहरी सहानुभूति है जो उनके कथा साहित्य में, कहानियों में स्पष्टतः झलकती है।

संदर्भ

1. औरत के हक में, तसलीमा नसरीन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–99
2. सिमोन वोउवार, "The Second Sex (हिन्दी अनुवाद–स्त्री उपेक्षिता, सामायिक प्रकाशन नई दिल्ली)
3. मुझे ही होना है बार–बार, जया जादवानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–13
4. वही, पृष्ठ संख्या–30
5. हिन्दी महिलाकथाकारों के साहित्य में नारी–विमर्श, डॉ. दिलीप मेहरा, डॉ. प्रतीक्षा पटेल, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–7
6. मुझे ही होना है बार–बार, जया जादवानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–49
7. अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है, जया जादवानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, फ्लेप से (डॉ. सुनीता कुकरेती)
8. वही, पृष्ठ संख्या–16
9. वही, पृष्ठ संख्या–15
10. मैं अपनी मिट्टी में खड़ी हूँ काँधे पे अपना हल लिये, जया जादवानी मेधा बुक्स, नई दिल्ली, फ्लेप से (ओम निश्चल)